

॥ ओऽम् ॥

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

## दानदाताओं से अपील

dःnh; vk; l ; pd i fj "kn~ ds  
dk; l o xfrfot/k; ka es I g; kx  
dus gsg [kkrk l a[ k  
10205148690 LVV cd  
vkQ bf. M; k] ?kUVk?kj]  
fnYh&110007] vkbz , Q-  
, I -dkM - SBIN0001280 ij  
I h/ks Hkst dj ges Oku u-  
9868051444 ij , I - e- , I  
dj nA ; k 9958889970 ij  
Paytm dj nA & vfuy vk; l

वर्ष-38 अंक-1 ज्येष्ठ-2078 दयानन्दाब्द 198 01 जून से 15 जून 2021 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.06.2021, E-mail : [yuva.udghosh1982@gmail.com](mailto:yuva.udghosh1982@gmail.com) [aryayouthgroup@yahoo-groups.com](mailto:aryayouthgroup@yahoo-groups.com) Website : [www.aryayuvakparishad.com](http://www.aryayuvakparishad.com)

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 226वां वेबिनार सम्पन्न

### महर्षि दयानन्द व वेद पर गोष्ठी सम्पन्न

महर्षि दयानन्द ने वेदों के सही स्वरूप को प्रस्तुत किया —आचार्य हरिओम शास्त्री  
वेद सृष्टि का प्राचीनतम ज्ञान है —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 23 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती व वेद' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 222 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य हरिओम शास्त्री ने कहा कि लुप्त हुए वेदों को पुनः प्रस्तुत कर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव जाति पर महान उपकार किया है। उन्होंने वेदों के सही स्वरूप को प्रस्तुत किया और अनेकों भ्रांतियों का निवारण भी किया। इसीलिए ऋषि दयानन्द सरस्वती इस धरा पर आज 'वेदों वाले ऋषि' के नाम से जाने जाते हैं। उनके धरा पर आने से पहले महाभारत काल से लेकर उन्नीसवीं सदी तक समस्त विद्वानों, तपस्वियों, लेखकों और कवियों सभी ने अपने अपने ग्रन्थों में नाम तो वेदों के लिए, वेदों का नाम लेकर अपने अपने विचारों व मतों को अपने शिष्यों में फैलाये परन्तु वेदों में वास्तव में क्या कहा गया है किसी ने भी न तो जाना और न ही उसके लिए प्रयास किए। जब स्वामी दयानन्द सरस्वती गुरुवर प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द जी महाराज से मिले तो उन्होंने इन्हें वेदों की चाबी रूपी महर्षि यास्क द्वारा लिखित ग्रन्थ निरुक्त और निघण्टु तथा महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी एवं महर्षि पतंजलि के महाभाष्य को पढ़ाया। यहीं चारों ग्रन्थ "वेदज्ञान की चाबी" थे जिन्हें पढ़कर महर्षि दयानन्द जी ने वेदों में वर्णित रहस्यों को खोला और पंडितों को बताया कि जिस शंकासुर राक्षस को तुम वेदों को चुराकर ले जाने वाला कहते हो मैं उसी तुम्हारे आलस्य रूपी शंकासुर को मारकर वेदों को वापस ले आया हूं। अब दिखाओ कि जिस

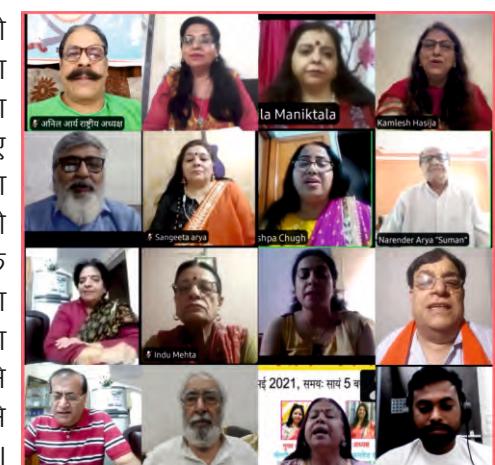
(शेष पृष्ठ 2 पर)



### जीवन रक्षक रक्त पर गोष्ठी सम्पन्न

मानवता की सेवा के लिए रक्तदान करना चाहिए —डॉ. सुषमा आर्य  
रक्तदान सर्वोपरि दान है —डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक

शुक्रवार 21 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में जीवन रक्षक रक्त विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कैरोना काल में 221 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ. सुषमा आर्य (आयुर्वेदाचार्य) ने कहा कि रक्त शरीर के लिए सबसे ज्यादा उपयोगी है। रक्त सारे शरीर को ताकत देकर स्वस्थ रखता है। बार-बार संचरण के कारण उससे ऊष्मा बढ़ जाती है जो तापमान कहलाती है। यह तापमान का नियंत्रण रखता है और 98.4 तक बनाए रखता है। संचरण के समय पूरी ऑक्सीजन साथ लेकर जाता है फेफड़ों तक और कार्बन डाई साइड वापस लेकर आता है। इसी संचरण को रक्तचाप कहते हैं। 120 की स्पीड से ऑक्सीजन लेकर शरीर में जाता है और अशुद्ध रक्त 80 की स्पीड से आता है। उदर के तिल्ली में रक्त का निवास है। उत्सर्जी पदार्थ जैसे यूरिया अमोनिया इत्यादि किडनी तक पहुंचाता है जिससे शरीर निरोग रह सके अधिक तला भुना खाने से, बासी खाने से और जंक फूड आदि अधिक मात्रा में खाने रक्त में चिकनाहट बढ़ जाती है जिसे हाई कैलस्ट्रोल कहते हैं जिसके कारण हृदय रोग हो जाने का खतरा बढ़ जाता है। खून को पतला करने के लिए एक चुटकी दालचीनी और एक चम्मच अदरक का रस गर्म पानी में लेने से खून को पतला किया जा सकता है। खाली पेट लहसुन खाने से रक्त की चिकनाहट कम होती है। केयन मिर्च खाने से, लौकी का जूस, तोरी का जूस और अर्जुन की छाल का सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल को कम किया जा सकता है। व्यायाम प्राणायाम भी अत्यंत आवश्यक है। रक्त शोधन के लिए पुदीने का अर्क, तुलसी का अर्क, कच्ची हल्दी का रस और किशमिश कल्प अत्यंत कारगर हैं। हिमोगलोबिन को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है नहीं तो शरीर के अंदर ऑक्सीजन की मात्रा कम पहुंचती है। रक्त में प्लाज्मा 60 से 55 और रुधिराणु 40: होते हैं। रुधिराणु के तीन भाग होते हैं आरबीसी, डब्ल्यूबीसी और प्लेटलेट्स। आरबीसी की कमी के कारण व्यक्ति शिथिल हो जाता है। डब्ल्यूबीसी की कमी के कारण रोगों से लड़ने की शक्ति कम हो जाती है और प्लेटलेट्स की कमी के कारण नाक, आंखों और शरीर के किसी भी भाग से रक्त आना शुरू हो जाता है। कीवी, नारियल पानी, पपीते के पत्ते का रस, तुलसी अर्क, गिलोय, चुकंदर, गाजर आदि खाने से हिमोगलोबिन बढ़ जाता है और रक्त विकार ठीक हो जाते हैं। इस अमूल्य रक्त का प्रयोग मानवता की रक्षा के लिए और समाज सेवा के कार्यों में अवश्य लगाना चाहिए। हरियाणा राज्य के औषधि नियन्त्रक डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक ने कहा कि हर स्वस्थ व्यक्ति को 18 से 55 वर्ष की आयु वाले को रक्त दान करना चाहिए ये वह दान है जो किसी फैक्टरी में नहीं बन सकता, मैने भी लगभग 50 बार रक्तदान किया है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने मानव जीवन परोपकार के लिए बना है हमे रक्तदान अवश्य करना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि योग स्वस्थ रखने का उत्तम साधन है हम रक्तचाप सही रख सकते हैं। मुख्य अतिथि उमिला आर्या व अध्यक्ष कमलेश हसीजा ने अपनी शुभकामनाएं दीं। गायिका संगीता आर्या, पुष्पा चूध, दीप्ति सपरा, नरेन्द्र आर्य सुमन, रवीन्द्र गुप्ता, प्रतिभा कटारिया आदि ने गीत सुनाये। आर्य नेता आर पी सूरी, आनन्द प्रकाश आर्य, महेन्द्र भाई, सौरभ गुप्ता, राजकुमार भंडारी, ओम सपरा, राजश्री यादव आदि उपस्थित थे।



# रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के उपाय पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

अष्टांग योग से ही मानव कल्याण सम्भव – योगाचार्य सेवक जगवानी  
हम जो प्रकृति को देंगे, वही प्रकृति हमें लौटायेगी – राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार, 3 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा आयोजित गोष्ठी ऑनलाइन गूगल पर ऐंग्रेजी अंग्रेजी अॉनलाइन गूगल पर ऐंग्रेजी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के उपाय विषय पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न हुई। यह 212 वेबिनार था। मुख्य वक्ता योगाचार्य सेवक जगवानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज संपूर्ण विश्व में कोरोना महामारी का संकट छाया हुआ है भारत में दूसरी लहर में हमारे देश वासी अपने शरीर को त्यागने के लिए विवश हो चुके हैं लेकिन जाने से पूर्व हमारा क्या कर्तव्य है इस पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि ईश्वर प्रदत्त उपहार प्राण शक्ति हमारे शरीर के अंदर है जो की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है हमारा इस्यून सिस्टम सही कार्य करता रहे। यदि इस उपहार का सही उपयोग करें तो हम इस महामारी से बचे रह सकते हैं ऐसे समय में प्रशासन द्वारा दी गई गाइडलाइन का पालन करना चाहिए। ईश्वर की प्रकृति प्रयानी प्रेम कृति यानी रचना ईश्वर ने प्रकृति हमारे लिए बनाई है और हम प्रकृति के विरुद्ध वह सब कार्य हमने किया जल को प्रदूषित किया अन्न को वायु को प्रदूषित किया हमारे साथी जो प्राणी थे उनको मारकर उनका मांस खा रहे हैं संसार की 80: जनता मांस खा रही है उनके इस पाप की वजह से यह महामारी आई है आज कोरोना महामारी के चलते मृत्यु हो जाने पर सगा भाई भी पास जाने से डर रहा है नगर निगम के कर्मचारी ही उसे श्मशान घाट ले जाकर उसका अंत्येष्टि संस्कार कर रहे हैं। इतने खतरनाक रोग की कभी कल्पना भी नहीं की थी आज लोग नौकरी, धन्धे से हाथ धो बैठे हैं चिंता और तनाव ग्रस्त हैं उन्होंने प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया वह कहते हैं एकांतवास में रहकर उसका जप करो। इस समय हमें चिकित्सक विशेषज्ञों सहायक लोगों का धन्यवाद करना चाहिए डर से अनावश्यक वस्तुओं को ना खरीदें। जब तक उसकी कृपा रहेगी हम चलते रहेंगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समय-समय पर दिशा निर्देश देते रहते हैं लेकिन हम उस गाइडलाइन पर नहीं चले इसलिए यह महामारी फैली है परिवार और मित्रों के साथ भावनात्मक संबंध बना कर रखें, एकांत में परमात्मा का नाम लेना आईसोल्यूशन कहते हैं, हम घर पर रहे, उचित दूरी का पालन करें दिनचर्या में योग को जोड़ना आवश्यक है यह दौर भी गुजर जाएगा ईश्वर कृपा से यह रोग दूर होगा सरल सिंपल एक्सरसाइज का अभ्यास कराया। महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग को अपना कर ही मानव कल्याण संभव है। यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि को अपनाएं, कपालभाति, अनुलोम विलोम का अभ्यास करें इससे ऑक्सीजन बढ़ेगी विषाणु बाहर निकलेगा और हम स्वस्थ रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेता प्रेम सचदेवा ने की, उन्होंने प्रकार्तिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि अपनी मृत्यु... अपनों की मृत्यु डरावनी लगती है बाँकी तो मौत का उत्सव मनाता है। मौत से प्यार नहीं, मौत तो हमारा स्वाद है। बकरे का, पाए का, तीतर का, मुर्ग का, हलाल का, बिना हलाल का, ताजा बच्चे का, भुना हुआ, छोटी मछली, बड़ी मछली, हल्की औंच पर सिका हुआ। न जाने कितने बल्कि अनगिनत स्वाद हैं मौत के। क्योंकि मौत किसी और की, और स्वाद हमारा। स्वाद से कारोबार बन गई मौत।

मुर्गी पालन, मछली पालन, बकरी पालन, बकरी पालन और मकसद हत्या। स्लाटर हाउस तक खोल दिए वो भी अॉफिशियल। गली गली में खुले नान वेज रेस्टॉरेंट मौत का कारोबार नहीं तो और क्या हैं? मौत से प्यार और उसका कारोबार इसलिए क्योंकि मौत हमारी नहीं है। जो हमारी तरह बोल नहीं सकते, अभिव्यक्त नहीं कर सकते, अपनी सुरक्षा स्वयं करने में समर्थ नहीं हैं, उनकी असहायता को हमने अपना बल कैसे मान लिया? कैसे मान लिया कि उनमें भावनाएँ नहीं होतीं या उनकी आहें नहीं निकलतीं? डाइनिंग टेबल पर हड्डियाँ नोचते बाप बच्चों को सीख देते हैं, बेटा कभी किसी का दिल नहीं दुखाना! किसी की आहें मत लेना! किसी की आँख में तुम्हारी वजह से आँसू नहीं आना चाहिए! बच्चों में झुठे संस्कार डालते बाप को, अपने हाथ में वो हड्डी दिखाई नहीं देती, जो इससे पहले एक शरीर थी, जिसके अंदर इससे पहले एक आत्मा थी, उसकी भी एक माँ थी.... ?? जिसे काटा गया होगा? जो कराहा होगा? जो तड़पा होगा? जिसकी आहें निकली होंगी? जिसने बहुआ भी दी होगी? कैसे मान लिया कि जब-जब धरती पर अत्याचार बढ़ेंगे तो भगवान सिर्फ तुम इंसानों की रक्षा के लिए अवतार लेंगे?

क्या मूक जानवर उस परमपिता परमेश्वर की संतानें नहीं हैं? क्या उस ईश्वर को उनकी रक्षा की चिंता नहीं है? आज कोरोना वायरस उन जानवरों के लिए, ईश्वर के अवतार से कम नहीं है। जब से इस वायरस का कहर बरपा है, जानवर स्वच्छं घूम रहे हैं, पक्षी चहचहा रहे हैं।

उन्हें पहली बार ईश्वरी पर अपना भी कुछ अधिकार सा नजर आया है। पेड़ पौधे ऐसे लहलहा रहे हैं, जैसे उन्हें नई जिंदगी मिली हो। धरती को भी जैसे साँस लेना आसान हो गया हो सृष्टि के निर्माता द्वारा रचित करोड़ों-करोड़ योनियों में से एक कोरोना ने हमें हमारी औकात बता दी। घर में घुस के मारा है और मार रहा है। और उसका हम सब कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अब धन्तियाँ बजा रहे हैं, इबादत कर रहे हैं, प्रेरणा कर रहे हैं और भीख माँग रहे हैं हो उससे की हमें बचा ले। धर्म की आड़ में उस परमपिता के नाम पर अपने स्वाद के लिए कभी ईद पर बकरे काटते हों, कभी दुर्गा माँ या भैरव बाबा के सामने बकरे की बली चढ़ाते हों। कहीं तुम अपने स्वाद के लिए मछली का भोग लगाते हों। कभी सोचा.....!!! क्या ईश्वर का स्वाद होता है? .... क्या है उनका भोजन? किसे ठग रहे हो? भगवान को? अल्लाह को? जीसस को? या खुद को? मंगलवार को नानवेज नहीं खाता....!!! आज शनिवार है इसलिए नहीं....!!! अभी रोजे चल रहे हैं....!!! नवरात्रि में तो सवाल ही नहीं उठता....!!! झूठ पर झूठ.... झूठ पर झूठ....!! फिर कुतर्क सुनो..... फल सब्जियों में भी तो जान होती है? .... तो सुनो फल सब्जियाँ संसर्ग नहीं करतीं, ना ही वो किसी प्राण को जनमती हैं। इसी लिए उनका भोजन उचित है। ईश्वर ने बुद्धि सिर्फ तुम्हे दी। ताकि तमाम योनियों में भटकने के बाद मानव योनि में तुम जन्म-मृत्यु के चक्र से निकलने का रास्ता ढूँढ सको। लेकिन तुमने इस मानव योनि को पाते ही स्वयं को भगवान समझ लिया। आज कोरोना के रूप में मौत हमारे सामने खड़ी है। तुम्ही कहते थे कि हम जो प्रकृति को देंगे, वही प्रकृति हमें लौटायेगी। मौतें दीं हैं प्रकृति को तो मौतें ही लौट रही हैं बढ़ो....!!! आलिंगन करो मौत का....!!! यह संकेत है ईश्वर का। प्रकृति के साथ रहो। प्रकृति के होकर रहो। अन्यथा.... ईश्वर अपनी ही बनाई कई योनियों को धरती से हमेशा के लिए विलुप्त कर चुके हैं। उन्हें एक क्षण भी नहीं लगेगा। प्रमुख रूप से सर्वश्री यशोवीर आर्य, महेन्द्र भाई, आनन्द प्रकाश आर्य, प्रवीण आर्य, सौरभ गुप्ता, सुरेश आर्य, दुर्गेश आर्य, धर्मपाल आर्य, देवेन्द्र भगत, ईश आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, वेदव्रत बेहरा, उर्मिला आर्य, डॉ सुषमा आर्य, दीप्ति सपरा, कमलेश हसींजा, के एल राणा, कर्नल अनिल आहूजा, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, प्रवीन चावला, जनक अरोड़ा, मृदुला अग्रवाल आदि उपस्थित रहे।

## (पृष्ठ 1 का शेष)

मूर्तिपूजा, श्राद्ध तर्पण और सती प्रथा आदि कुरीतियाँ वेदों में कहां लिखी हैं। सायण, महीधर, उव्वट आदि भारतीय विद्वानों और कीथ, ग्रिफिथ, मैक्समूलर आदि विदेशी विद्वानों ने वेदों के अनर्गल और मानव तथा जीव मात्र विरोधी अपने वेदभाष्यों से वेदों को जनता में बदनाम कर दिया था। सामान्य भारतीय जनता तो वेदों का नाम तक सुनना नहीं चाहती थी। सन्त तुलसीदास आदि कवियों ने तो वेदों में राम स्तवन की बात भी कह डाली थी, कि चारों वेद तो रामजी के पावन चरित का ही वर्णन करते हैं। आचार्य श्री शंकर जी, आचार्य श्री रामानुज जी, आचार्य श्री वल्लभ जी, आचार्य श्री निम्बार्क जी आदि सभी आदरणीय प्रबुद्ध आचार्यों ने नाम तो वेदों का लिया और उनके नाम पर अपने अपने मत चलाये। परन्तु वेदों में वास्तव में क्या बात कही गई है उसे किसी ने भी नहीं कहा। सृष्टि की रचना के साथ ईश्वर ने वेदों को अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक ऋषियों के माध्यम से क्यों प्रकट किए। इसके पीछे क्या कारण है? यह किसी ने भी नहीं जानने की कोशिश नहीं की। वेदों में वर्णित शब्दों के अर्थ 'यौगिक' होते हैं वे ऐतिहासिक व्यक्तियों, स्थानों, वस्तुओं के बोधक नहीं होते हैं। सृष्टि की उत्पत्ति के समय वेदों की रचना हुई थी अतः बाद में लोगों ने वेदों से गुणवाचक सार्थक नामों को लेकर अपने अपने बच्चों, स्थानों, वस्तुओं के नाम रखे न कि इनसे वेदों ने नाम लिये। वेद सृष्टि के आदि काल से मानव मात्र का कल्याण करते आ रहे हैं इसलिए वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को वेदों वाला ऋषि कहा जाता है। एक कवि ने लिखा है—वेदों की बंशी हाथ में लेकर, महर्षि ने जब गीत सुनाए। सारे जहां में छा गई मस्ती, झूम उठे सब अपने पराए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वेद सृष्टि का प्राचीनतम ज्ञान है, बाकी सब मतमतान्तर है हमें वेदों के सच्चे स्वरूप को अपनाकर मानवमात्र का कल्याण करना चाहिए। उत्तर प्रदेश प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि वेदों के अलावा कल्याण का कोई मार्ग नहीं है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री सुषमा बजाज, पूर्व विधायक राजेन्द्र बीसला व अध्यक्ष समाजसेवी बॉम्बे डाईग के उपप्रधान रजनीश दत्त ने भी वेद मार्ग अपनाने पर जोर दिया। गायिका पुष्पा चुघ, उर्मिला आर्य, दीप्ति सपरा, बिंदु मदान, संध्या पांडेय, सुषमा आर्या, जनक अरोड़ा, मधु सहगल, नरेश खन्ना, नरेंद्र आर्य सुमन, संगीता आर्या आदि ने गीत सुनाये। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आनन्द प्रकाश आर्य, सौरभ गुप्ता, कमलेश हसींजा, प्रेम सचदेवा, वेद भगत, अरुण आर्य आदि उपस्थित थे।

# पुरुषार्थ से ही सब मनोरथ पूर्ण होते हैं -डॉ.भारत वेदालंकार

सत्संग व भजन जीवन जीने की कला सिखाते हैं –आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

सोमवार 31 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'मानव जीवन में पुरुषार्थ का वैदिक स्वरूप' पर ऑनलाइन जूम एप पर गोष्ठी आयोजित की गई। कोरोना काल में परिषद का यह 226 वां आर्य वेबीनार था। मुख्य वक्ता डॉ. भारत वेदालंकार (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) ने मानव जीवन में पुरुषार्थ का वैदिक स्वरूप पर चर्चा करते हुए बताया कि पुरुषार्थ पुरुषअर्थ पुरुष भी दो हैं साधारण पुरुष एक जीवात्मा है, परम पुरुष परमात्मा है, उन्होंने कहा कि पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है मनचाहा फल उसने पाया जो आलसी बनके पड़ा न रहा। चार प्रकार के पुरुषार्थ हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जिससे अभ्युदय, लौकिक व पारलोकिक उन्नति होती है वह धर्म है। धर्म ही हमें मनुष्य इतर अन्य प्राणियों से अलग करता है तभी हम धार्मिक बनते हैं। यज्ञ करना वेदानुकूल चलना धर्म है यह हमारे लौकिक और पारलोकिक सुख देने वाला है। अर्थ साधन है इसके बिना भी काम नहीं चलता अर्थ से ही सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है सुख का मूल धर्म है धर्म का मूल अर्थ है अतः धर्मानुकूल अर्थ कमाएं। काम = कामना, इच्छाएं यह भी मर्यादित होनी चाहियें तभी मोक्ष होगा। मोक्ष हमारा अंतिम लक्ष्य है। सबसे महत्वपूर्ण है कि इसके लिए प्रयत्नशील रहना है तभी हम तीनों प्रकार के दुखों से छुटकारा प्राप्त कर अखंड आनंद को प्राप्त कर सकते हैं और यह परमात्मा के सानिध्य से ही होगा। मुख्य अतिथि आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि मनुष्य जन्म परमात्मा की श्रेष्ठ कृति है मनुष्य ज्ञान, विचार, संगति करण के द्वारा देवत्व से मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है उन्होंने कहा कि अधिकांश लोगों को जीवन का उद्देश्य क्या है? पता नहीं, जिसके जीवन की उपलब्धि ना हो उसका जीवन बेकार है, उन्होंने कहा पांच ज्ञानेंद्रियां, मन और बुद्धि, संसार की हर वस्तु निर्माण का कुछ ना कुछ प्रयोजन है। संध्या में भी हम परमात्मा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शीघ्र प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं, उन्होंने आगे कहा कि सत्संग भजन और प्रवचन जीवन जीने की कला सिखाते हैं अतः प्राणी को अपने कल्याण के लिए इनसे जुड़ना चाहिए और उन पर चिंतन मनन भी करना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हे कर्मशील मनुष्य तू कर्म कर क्योंकि इस संसार में कर्मशील मनुष्य ही मनोकामना पूर्ण कर सुख पाते हैं। कर्म ही सब सुखों का मूल है कहा है कि मन चाहा फल उसने पाया जो आलसी बनकर पड़ा न रहा। परिषद के उत्तर प्रदेश के प्रांतीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि षष्ठु न बिसारिये हिम्मत न हारिये, हंसते मुस्कुराते हुए जीवन गुजारिये यही जीवन जीने का डंग है। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेत्री जनक अरोड़ा ने की। गायिका प्रवीना ठक्कर, रमा नागपाल, राज मेहन, दीप्ति सपरा, कुसुम भंडारी, राज रानी, मृदुला अग्रवाल, देवांश, महेश आर्य, रवीन्द्र गुप्ता, आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से आनन्द प्रकाश आर्य, सौरभ गुप्ता, वीरेन्द्र आहूजा, देवेन्द्र भगत, सुरेन्द्र शास्त्री, विजय लक्ष्मी आदि उपस्थित थे।



## वीर सावरकर की 138 वीं जयन्ती सम्पन्न

सच्ची शांति अंतर्मुखी होने में है—योगाचार्य प्रेम भाटिया

वीर सावरकर के आदर्श अपनाने की आवश्यकता—राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 28 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'क्या हम सुख चाहते हैं' पर गोष्ठी व 138 वीं वीर सावरकर जयन्ती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वीर सावरकर हिंदुत्ववादी महान विचारक व योद्धा थे, उनके आदर्शों को आज अपनाने की आवश्यकता है। जब तक समस्त हिन्दू समाज एक ओ३३ ध्वज के नीचे संगठित नहीं होगा तब तक समस्या का कोई हल नहीं निकलेगा। चाहे कश्मीर हो, बंगाल या केरल वहां के संदेश व घटनाक्रम को समझने व सोचने की जरूरत है अन्यथा बहुत देर हो जायेगी। उन्होंने कहा कि विश्व के इतिहास के सावरकर पहले व्यक्ति थे जिनको दो बार आजन्म कारावास की सजा सुनाई गई। वह राजनीति के हिन्दुकरण व हिंदुओं के सैनिकीकरण के पक्षधर थे। उनकी लिखी पुस्तक ४८५७ का प्रथम स्वतंत्रता संग्रामष्ठपने से पहले ही प्रतिबंधित हो गई थी। आज नई पीढ़ी को उनके संघर्ष पूर्ण जीवन को बतलाने की आवश्यकता है। योगाचार्य प्रेम भाटिया ने कहा कि व्यक्ति सच में सुख शांति नहीं चाहता। यदि जीवन में सच्ची सुख शांति चाहते हो तो बुरी बातें, यादे भुला देनी चाहिए। उनका बोझ जब हम लेकर चलते हैं तो वह अशांति व दुख देती है। हमें अच्छी बातें याद रखनी चाहिए वो आनन्द दायक रहेंगी और जीवन आसानी से व्यतीत होगा। अध्यक्षता करते हुए आनन्द प्रकाश आर्य (प्रांतीय अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश) ने कहा कि आज व्यक्ति भौतिक जगत के सुखों की खोज में दौड़ रहा है लेकिन सच्चा सुख आध्यात्मिकता में है, उन्होंने आगे कहा कि कोरोना काल में ओ३३ की ध्वनि, गायत्री मंत्र का अर्थ सहित गायन, चिंतन करने से परमात्मा का अंतर्मन में साक्षात्कार सम्भव है। अतः प्रातः व सायं इसका अभ्यास करें। उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि वीर सावरकर को यदि आज की युवा पीढ़ी अपना आदर्श बना ले तो कई प्रकार की समस्याएं स्वयं हल हो जायेंगी। उन्होंने कहा कि वीर सावरकर हिन्दू एकता व हिन्दू राष्ट्र निर्माण के प्रबल समर्थक थे। गायिका पुष्पा चूध, दीप्ति सपरा, डॉ रचना चावला, मधु बेदी, ईश्वर देवी, जनक अरोड़ा, महेश आर्य, रजनी गोयल, प्रवीना ठक्कर, सुषमा बजाज, के एल मल्होत्रा, रवीन्द्र गुप्ता आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से देवेन्द्र भगत, सौरभ गुप्ता, वीरेन्द्र आहूजा, सुरेन्द्र शास्त्री, उर्मिला आर्या, कमलेश हसीजा, ईश आर्य, विजय लक्ष्मी आदि उपस्थित थे।



## वेदों में गणेश पर गोष्ठी सम्पन्न

**श्री गणेश का अर्थ है ईश्वर का आशीर्वाद लेना—आर्य रविदेव गुप्ता**

मंगलवार 25 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'वेदों में गणेश की चर्चा' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कैरोना काल में परिषद का 224 वा वेबनार था। मुख्य वक्ता आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि वेदों में गणेश नहीं अपितु गणपति शब्द की चर्चा है, ऋग्वेद में 2 बार व 4 बार प्रयोग हुआ है। गण का अर्थ है जड़ पदार्थों अथवा चेतन प्राणियों में के समूह का स्वामी या पालक। स्वामी ही पति कहलाता है अतः गणपति ही गणेश है। पुराणों में वर्णित गजानंद स्वरूप अवैज्ञानिक, काल्पनिक व हास्यास्पद है। किसी कार्य को शुरू करने से पहले 'श्री गणेश' कहने का अभिप्राय यही है कि ईश्वर का स्मरण व कार्य को निर्विघ्न करने की प्रार्थना है, यही गणेश का सच्चा व वैदिक स्वरूप है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वेदों में किसी व्यक्ति विशेष की कोई चर्चा नहीं है यह सृष्टि का आदि ज्ञान है। मुख्य अतिथि आर्य नेता वीरेन्द्र आहूजा ने निर्धन वर्ग के लिए कंप्यूटर सेन्टर, महिला सिलाई केंद्र आदि आर्य समाज मंदिरों में खोलने का सुझाव दिया। अध्यक्ष राजेश मेहंदीरत्ता ने सभी का आभार व्यक्त किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने वेदों की शिक्षाओं को आत्मसात करने का आह्वान किया। गायिका शकुंतला नागिया, अजय कपूर, पुष्पा चुध, सुखवर्षा सरदाना, दीपि सपरा, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, मधु बेदी, सुदेश डोगरा, सुदेश आर्या, राजकुमार भंडारी आदि ने भजन प्रस्तुत किये। आचार्य महेन्द्र भाई, देवेन्द्र भगत, सौरभ गुप्ता, डॉ रचना चावला, सुरेंद्र शास्त्री, गजेन्द्र चौहान, ओम सपरा, सुषमा बजाज, अनिता रेलन आदि उपस्थित थे।



## हास्य योग रहो निरोग गोष्ठी सोल्लास सम्पन्न

**हास्य योग से तनाव घटायें ऑक्सीजन बढ़ाये—जितेन कोही (हास्य योग गुरु)**

**हसे और हंसाये समाज मे प्रसन्नता बढ़ाये—राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य**

रविवार 23 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'हास्य योग रहो निरोग' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कैरोना काल में 223 वा आर्य वेबिनार था। हास्य योग गुरु जितेन कोही ने कई प्रकार के हास्य योग करवाये तथा कहा कि सभी प्रसन्न रहे। उन्होंने कहा कि हास्य योग करने से ऊर्जा बढ़ती है, ऑक्सीजन स्तर बढ़ता व तनाव घटता है। तनाव भरा जीवन शरीर व मन को बीमार बना देता है, इसलिए जी भर के मुस्कराया जाए और खुल के हंसा जाए जिससे बीमारियों को कोसो दूर रखा जाए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि लोग अब हंसना व मुस्कराना भूल गए हैं, कैरोना ने व लोकडॉन ने जीवन अधिक समस्याग्रस्त व तनावपूर्ण कर दिया है अकेलापन भी जीना दूभर कर रहा है ऐसे समय में हास्य योग दवाई का काम करता है जितेन कोही इस उपकार कार्य के लिए साधुवाद के पात्र है। मुख्य अतिथि समाजसेवी सुनील गुप्ता व अध्यक्ष देवेन्द्र भगत ने भी जीवन तनाव मुक्त रखने की प्रेरणा दी और पुराने मित्रों को फोन करने व गप शाप करने की सलाह दी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि जीवन बड़ा अनमोल है इसे हँसते हुए गुजारे। गायिका रेखा गौतम, रवीन्द्र गुप्ता, मधु सहगल, अंजना गुप्ता, संध्या पांडेय, सुषमा बजाज, प्रतिभा कटारिया, जनक अरोड़ा, ईश्वरदेवी आदि ने मधुर भजन सुनाये। आचार्य महेन्द्र भाई, माया आर्या, हरिओम शास्त्री, कमलेश हसीजा, प्रेम सचदेवा, राजेश मेहंदीरत्ता, ईश आर्य आदि उपस्थित थे।



## आनंदमय जीवन कैसे बिताये आर्य गोष्ठी सम्पन्न

**सुख, दुःख व अपमान से ऊपर उठे—दर्शनाचार्य विमलेश बंसल**

**सकारात्मक सोच प्रसन्नता देती है—राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य**

सोमवार 17 मई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'आनंदमय जीवन कैसे बिताये' विषय पर ऑनलाइन आर्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कैरोना काल में 220वां वेबिनार था। वैदिक विदुषी दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने अपनी ओजस्वी, ज्ञानवर्धक वाणी में कहा कि संसार एक नुकीले, बर्फीले पत्थरों वाली नदी है जिसे यजुर्वेद में (अश्मन्वती) शब्द से प्रकट किया है। ऐसी नदी को वही लोग पार कर पाते हैं जो होशपूर्वक और जोश पूर्वक धैर्य तथा कम भार वाले होकर चलते हैं। सुख-दुख, धूप-छांव, मान-अपमान के बर्फीले नुकीले पत्थर, इस नदी में भरे पड़े हुए हैं सुख का पानी कम है, बहाव तीव्र है, सहयोगी, उपयोगी व उद्योगी तथा परस्पर मित्र बनकर, प्रसन्नता पूर्वक एक दूजे का हाथ पकड़कर चलने से यह यात्रा दुर्गम से सुगम हो जाती है। ईश्वर की कृपा व विद्या व विवेक के सहारे से आनन्दित हो इस संसार को कुशलता से जीने में सहायता मिलती है। संसार की नश्वरता और आत्मा की अमरता को जान हँस हँस, हंस बन कर व्यक्ति विचलित व दुखी हुए बगैर स्थितप्रज्ञ हो आनन्द के साथ इस नदी को पार कर जाता है। तो आइए— अविद्या के कारण रोग, कष्ट, क्लेश, कोरोना जैसी महामारी, बीमारी, सुख-दुख, अनुकूल स्थिति— विपरीत परिस्थिति यह तो सब आती रहेंगी, जाती रहेंगी इनसे घबराना नहीं, न भय खाना, इन पर विजय प्राप्त करते हुए सबको मिलजुलकर आगे बढ़ना है यात्रा लंबी है निराशा से और लंबी प्रतीत होती है। अतः आशावादी हो सकारात्मक सोच के साथ प्रसन्नतापूर्वक, सृजनात्मक, रचनात्मक, सेवा कार्यों से जुड़ते हुए ईश्वरीय कार्यों में व्यस्त मस्त हो यह संसार नदी पार करें। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि सकारात्मक सोच व्यक्ति के आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करती है। जिससे व्यक्ति स्वयं ही प्रसन्नता का अनुभव करता है। परिषद के उत्तर प्रदेश प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि योग प्रसन्नता का व सुख देने का साधन है जीवन में इसे आत्मसात करना चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ कल्पना रस्तोगी व अध्यक्ष समाजसेवी वीना वोहरा ने भी उत्साह पूर्ण जीवन पर प्रकाश डाला। गायिका पुष्पा चुध, दीपि सपरा, नरेन्द्र आर्य सुमन, वीरेन्द्र आहूजा, राजकुमार भंडारी, संध्या पांडेय, राजश्री यादव, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता आदि ने गीत प्रस्तुत किये। आचार्य महेन्द्र भाई, आनन्द प्रकाश आर्य, सौरभ गुप्ता, कुसुम आर्या, आशा आर्या, कुसुम भंडारी, संजय सपरा, रेखा गौतम आदि उपस्थित थे।

